UNIFICATION OF ITALY: इटली का एकीकरण

UNITA d'ITALIA
RESORGIMENTO

ROLE OF MAZZINI, GARIBALDI, CAVOUR & IMMANUEL-II

'CARBONARI'
'YOUNG ITALY'

छोटे-छोटे राज्यों में विभक्त, आस्ट्रिया का आधिपत्य; प्रायद्वीप में राष्ट्रीयता व स्वतंत्रता मान्य नहीं

जोज़ेफ मात्सीनी (1805-72): जन्म-जिनोआ | पिता चिकित्सक व प्रोफ़ेसर | बाल्यकाल में
GIUSEPPE MAZZINI देश की दुर्दशा का अनुभव: 'सकल्प लिया कि सदा काले वस्त्र पहनूंगा
क्यूँकि लगता था मैं देश-दुर्दशा पर विलाप कर रहा हूँ' (अपूर्ण आत्मकथा) | यौवन में साहित्य की
ओर झुकाव, 'ऐतिहासिक नाटकों के हजारों दृश्य अन्त: चक्षुओं के सामने नाचते थे' | यौवन में ही
उसे लगा कि वह एक पावन कार्य के लिए आया है; राजनीतिक आन्दोलन के लिए उसने साहित्य
को त्याग दिया और 'कार्बोनारी' जैसी क्रांतिकारी संस्था में शामिल हो गया | रातों को सोचते हुए
घूमता था | 1830 में उसे गिरफ्तार कर सावोना के किले में रखा गया | जिनोआ के राज्यपाल ने
उसके पिता से पूछा कि मात्सीनी क्या सोचता था | सावोना में उसे बस आकाश व समुद्र
ही दिखायी पड़ता था, वह कहता था, 'आलस्य के अलावा प्रकृति में यही दो चीजें सबसे भव्य हैं' |
छ: माह बाद उसे देश निकाला मिला; लगभग 40 साल निर्वासन में इंग्लैंड, फ्रांस, स्वीटज़रलैंड
में रहा | 1831 में उसने 'तरुण इटली' नामक संस्था बनायी जिसने इटली के निर्माण का मार्ग
प्रशस्त किया | पहले 'कार्बोनारी' की दो क्रांतियाँ असफल हुई थीं; वह संस्था से दूर हो गया क्योंकि
उसका लक्ष्य मात्र ध्वंसात्मक था, पुनर्निर्माण नहीं | उसके अनुसार क्रांतियाँ जनता द्वारा जनता
के लिये होनी चाहिए | अपने संगठन को गुप्त रखा ताकि कुचल न दिया जाय | संगठन सिर्फ़
ध्वंसकारियों का संघ न हो, इटालियन्स को शिक्षा, ज्ञान, नैतिकता, आदर्श, कर्तव्य, त्याग की
भावना जगाए; सिर्फ़ 40 साल से कम के युवा ही सदस्य बनें; 'विद्रोही जनता को सन्देश देने के
लिए युवा नेतृत्व में जादुई प्रभाव होता है' | वह इटली के एकीकरण को नया धर्म मानता
था, उसने कहा कि 'युवाओं का जीवन मिशनरीज़ सा हो;' 'गाँवों तक स्वतंत्रता को धर्म के रूप में
पूज्य बना दो, स्वाधीनता-देवी की स्थापना में जेलों के कष्ट तक झेलना सिखा दो' 'विचारों
के पौधे शहीदों के खून से ही पनपते हैं' उसके पहले ऐसा दुर्धर्ष आदर्श पैदा नहीं हुआ
था; असंख्य लोगों में उसका असीम प्रभाव बन गया | 1833 तक 'तरुण इटली' के 60,000 सदस्य
हो गये, सर्वत्र शाखाएँ बन गयीं; काले सागर के तट पर गेरीबाल्डी जैसा प्रभावी उससे जुड़
गया | 19वीं सदी के इस रूमानी आंदोलन में अज्ञात लोग बहुसंख्य सदस्य बने; 'सभी
महान आंदोलन उन अनाम लोगों से शुरू होता है जिनके पास कठिनाइयों की परवाह न करने
के अलावा और कोई बल नहीं होता |' संस्था का पहला लक्ष्य था आस्ट्रिया से मुक्ति; जिसके
लिये युद्ध अनिवार्य था, जिसमें विदेशी सहायता नहीं चाहिए; 2 करोड़ लोगों के राष्ट्रीय
आंदोलन के सामने आस्ट्रिया टिक न पायेगा | मात्सीनी ने घोषणा की कि राष्ट्रीय एकता का
आदर्श व्यावहारिक है, इस अग्नि को उसने अधिकांश इटालियन्स में धधका दिया | वह
गणतंत्रवादी था, 'संयुक्त इटली के आदर्श का तर्क दिया | वह लंदन में निर्वासित था, साधनहीन
था, उसके लिये प्रभावी नेतृत्व कठिन था | गम्भीर चिन्तक उसे उग्र रहस्यवादी एवं अव्यावहारिक
कहते थे; रूढ़िवादियों को विभक्त इटली की एकता असम्भव लगती थी, मुट्ठी भर लोग
राज्यों का एक संघ बनाकर पोप को मुखिया देखना चाहते थे, कुछ लोग राजतन्त्र के
समर्थक थे, कुछ आस्ट्रिया को भी संघ में रखना चाहते थे, कुछ बाल्कन क्षेत्रों को भेंट
कर आस्ट्रिया को भगाना चाहते थे; इन वैचारिक मतभेदों में संघर्ष की आग और भड़की |
1848 व 49 के निष्फल संघर्षों के बाद स्थिति और नैराश्यपूर्ण हो गयी; किन्तु एक क्षेत्र में
परिवर्तन हुआ था; पीडमांट ही बस इस त्रासदी से बच पाया; यद्यपि 1848 में कुस्तोत्सा
और 1849 में नोवारा में वह हारा था, फिर भी उसकी नैतिक जीत हुई थी | एक राजा
ने आजादी के लिए दो बार गद्दी को दाँव पर लगा दिया, जिससे अधिकांश
इटालियन्स की दृष्टि में सेवॉय का राजवंश राष्ट्र का नेता बन गया | उसी राजा
चार्ल्स अलबर्ट ने अपनी जनता को एक संविधान भी दिया; नोवारा के युद्धोपरान्त
उसने गद्दी छोड़ दी; तब उसका 29 वर्षीय पुत्र विक्टर इमानुअल बैठा |

विक्टर इमानुएल II (1820-70): आस्ट्रिया इमानुएल से समझौते को तैयार था
VICTOR EMMANUEL II: यदि वह नये संविधान को रद्द कर दे; यह भी कहा कि यदि
वह किसी पड़ोसी पर हमला करेगा तो आस्ट्रिया साथ देगा। उसके इंकार करने पर इटालियंस
ने उसे ईमानदार राजा की उपाधि दी। आगामी दस साल उसका इतिहास इटली के निर्माण
का इतिहास था। अन्य राज्यों से निष्कासित उदारवादियों की बड़ी संख्या पीडमांट में शरण
पाती थी। इमानुएल सेनानी था, बड़ी प्रतिभा न थी पर वचन का पक्का था। 1850 मे उसे
कावुर नामक प्रधानमंत्री मिला जिसे 19वीं सदी के श्रेष्ठतम राजनीतिज्ञों में गिना जाता है।
PIEDMONT

काउंट कावूर (1810-61): पीडमांट के सामन्त परिवार में 1810 में जन्मा कावूर
COUNT CAVOUR सैन्य शिक्षा प्राप्त कर सेना में इन्जीनियर बना। उदार विचारों को
बारबार प्रकट करने के नाते उसके अधिकारी खफ़ा हो गये; उसे अर्द्ध कारागृह में रखा
गया। 1831 में इस्तीफ़ा देकर 15 साल देहात में जमींदारी की। राजनीतिक रुचि के नाते
इंगलैंड, फ्रांस घूमने कई बार गया; कहता था कि 'अगर मैं अंग्रेज होता तो आज मेरा
बड़ा नाम होता'। उसने प्रतिनिधि संस्थाओं का गहन अध्ययन किया; इंगलैंड की
'हॉउस ऑव कॉमन्स' की दर्शक-दीर्घा में रातों को बैठा रहता था। 1848 में पीडमांट में
जब संसद व संविधान बना तो स्वागत करने वालों में सबसे आगे था; वह कहता था
कि 'इटली का निर्माण आजादी के बिना नहीं होगा'। जब कभी उसकी नीतियों के आड़े
आयीं संसदीय संस्थाएं, फिर भी वह इनका पक्षधर रहा; कहता था कि 'जनता देर से
सही, एक दिन सत्य जान लेती है'। पीडमांट की प्रथम संसद में वह चुना गया, 1850
में मंत्रीपरिषद् में आया और 1852 में मुख्यमंत्री बना जिस पद पर आजीवन रहा। उसके
विचार मात्सीनी से भिन्न थे। आस्ट्रिया से उसे घृणा थी क्योंकि वह उत्पीड़क था। पिछले
40 सालों से देखा था कि क्रांति मात्र से आस्ट्रिया को भगाना संभव न था। इसके लिए
सैन्य शक्ति आवश्यक थी। उसका विश्वास था कि इटली की आजादी सेवॉय के वंश
तथा पीडमांट के राजतंत्र के नेतृत्व मे ही संभव है, नये राज्य के निर्माण में सांविधानिक
राजतंत्रीय प्रणाली ही लागू होगी। पीडमांट को वह आदर्श राज्य बनाना चाहता था ताकि
समय आने पर अन्य राज्य उसके नेतृत्व में सम्मिलित हो सकें। कावूर ने स्वतंत्र
राजनीतिक जीवन की स्थापना की जिससे जनता स्वशासन सीख जाय; उसने आर्थिक
प्रगति को परवान चढ़ाया, उत्पाद, व्यापार, कृषि, रेल को विकसित किया; पीडमांट को
उदार व प्रगतिशील आदर्श राज्य बना दिया। उसका लक्ष्य किसी महाशक्ति को इटली का
मित्र बनाना था। यूरोप की राजनीति और व्यक्तियों में गहन रुचि रखने वाले यह असाधारण
लौह पुरुष सिर्फ़ 50 लाख जनसंख्या वाले छोटे से राज्य के प्रधानमंत्री होने के बावजूद
यूरोप में सर्वाधिक प्रभावशाली था। वह नेपोलियन तृतीय जैसे महत्वाकांक्षी की यूरोप
में सर्वश्रेष्ठ सेना वाले फ्रांस की ओर आकृष्ट था, 'हम न भी चाहें तो हमारा भाग्य फ्रांस
पर निर्भर है'। 1855 में उसने क्रीमिया-युद्ध में फ्रांस-इंगलैंड का साथ दिया; युद्धोपरान्त
पेरिस शांति संधि में पीडमांट को भी शामिल किया जहाँ यूरोपीय शक्तियों के सामने कावूर
को आस्ट्रिया के विरुद्ध इटली का विवाद उठाने का सुअवसर मिला। दो साल बाद
जुलाई 1858 में नेपोलियन तृतीय से प्लोम्बियेर में हुई मुलाकातों में इटली से
आस्ट्रिया को भगाने की योजना बनायी; इटली को आल्पस से एड्रियाटिक तक मुक्त करना
तय हुआ; लोम्बार्डी, वेनिशिया और पोप के राज्य के कुछ हिस्से पीडमांट को मिलेंगे, फिर
इटली के राज्यों का परिसंघ पोप की अध्यक्षता में बनेगा; सेवॉय और नीस फ्रांस को मिलेंगे।
नेपोलियन तृतीय की राष्ट्रीयता के सिद्धान्त पर ही वैदेशिक नीति थी; पहले 1831 में इटली की
क्रांति में स्वयं भी उसने भाग लिया था, शायद 'कार्बोनारी' का भी सदस्य था; 1815 की
अपमानजनक संधि का बदला भी लेना था; राज्यक्षेत्र बढ़ाने की इच्छा भी थी।

विलाफ्रांका की संधि (1859):

1859 में आस्ट्रिया से फ्रांस-पीडमांट ने युद्ध छेड़ दिया; 4 जून को मागेंटा और 24 जून को सोल्फेरीनो में बड़े युद्धों में पीडमांट-फ्रांस की जीत हुई; 19 वीं सदी के सबसे बड़े युद्धों में सोल्फेरीनो में आस्ट्रिया के 22,000 और मित्र देशों के 17,000 फौजी मारे गये; लोम्बार्डी और मिलान पर कब्जा हो गया, वेनीशिया के ढहने के पूर्व अकस्मात नेपोलियन ने बिना बताये 11 जुलाई को विलाफ्रांका में आस्ट्रिया के सम्राट से संधि कर ली; शर्तें थीं- पीडमांट को लोम्बार्डी दें, आस्ट्रिया को वेनीशिया; इटालियन राज्यों का एक परिसंघ बने, टस्कानी व मोडेना उनके पूर्व राजाओं को वापस हो जिन्हें विद्रोही जनता ने भगा दिया था। शायद नेपोलियन युद्ध की बरबादी से आघात में आ गया, उधर प्रशिया कूदने को तैयार हो गया; फिर पड़ोस में इटली के संयुक्त राष्ट्र की संभावना से फ्रांस को भी खतरा हो सकता था। उधर इटालियन्स निराश और गुस्से हो गये, कावूर ने राजा से कार्यवाही को कहा और न मानने पर इस्तीफा दे दिया। इमानुएल की दूरदृष्टि से पीडमांट को स्थाई लाभ मिला। इटालियन्स दृढ़ प्रतिज्ञ थे; पार्मा, मोडेना व टस्कानी के राजाओं को भगा दिया था, पोप के राज्य के उत्तरी भाग रोमेग्ना को मुक्त कर लिया था; जनता ने फ्रांस-आस्ट्रिया के फैसले से निष्कासित राजाओं की वापसी को नकार दिया; इंगलैंड ने उनका राजनैतिक समर्थन किया; लार्ड पामर्स्टन ने कहा कि जनता को राजा हटाने का हक है, इन रियासतों के पीडमांट में शामिल होने से जनता का हित होगा।' वहाँ की जनता ने 11-12 मार्च 1860 को पीडमांट में शामिल होना स्वीकार किया; इमानुएल ने प्रभुत्व स्वीकारा और 2 अप्रैल 1860 को पीडमांट के परिवर्धित राज्य की टूरीन में प्रथम संसद बैठी; 1 साल में ही इस छोटे राज्य की जनसंख्या 1 करोड़ 10 लाख हो गयी। 1815 में विएना संधि में जिस देश को मात्र एक भौगोलिक नाम दिया गया था, वह एक राष्ट्र बनने को अग्रसर था। जब क्रांति के सिद्धान्त की जीत दीख रही थी। नेपोलियन ने इसे भांप लिया, बदले में सेवॉय व नीस ले लिया।

गेरीबाल्डी (1807-82):

GIUSEPPE GARIBALDI

1807 में नीस में जन्मे गेरीबाल्डी को माँ-बाप पादरी बनाना चाहते थे किन्तु उसने नाविक का जीवन चुना। 'तरुण इटली' में शामिल हो कर उसने छापामार लड़ाई शुरू की; 1834 में मात्सीनी के नाकाम विद्रोह में भाग लेने के नाते उसे सजाए-मौत मिली पर वह निकल भागा; निर्वासित के रूप में 14 साल दक्षिणी अमेरिका में रहा; 'इटालवी सेना' नामक सैन्य दल बनाकर अनेक युद्धों में भाग लिया; 1848 की क्रांति की खबर सुनकर इटली लौटा; इस 'मांटीवीडो के बीर' के साथ आस्ट्रिया के खिलाफ हजारों एकत्र हो गये; क्रांति की नाकामी के बाद वह रोम चला गया जहाँ उसे सैन्य प्रतिरक्षा का भार सौंपा गया, नगर का पतन पास देखकर 4000 फौजियों के साथ भागा और आस्ट्रिया पर वेनीशिया में हमलेकी सोचने लगा; आस्ट्रिया-फ्रांस की फौजों ने दौड़ाया तो सेना को छोड़ उसे स्विट्जरलैंड में भागना पड़ा, बाद में जब तट पर उतरा तो पहाड़ों तक उसका पीछा किया गया; रेनेना के पास झोपड़ी में उसकी वीर पत्नी अनीता चल बसी; अन्ततः उसे अमेरिका भागना पड़ा लेकिन उसकी बहादुरी की गाथाएँ जनता को जगाती रहीं। सालों वह नीस में छिपता रहा, स्टेटन द्वीप में मोमबत्ती भी बनाई; 1854 में फिर इटली आकर काप्रीरा द्वीप पर खेती करने लगा; 1859 में स्वयंसेवकों को लेकर फिर से आस्ट्रिया के विरुद्ध युद्ध में कूदा; सेना और जनता उसकी दीवानी थी; 1860 में उसने सिसली और नेपिल्स पर हमला किया; सिसली की जनता ने नेपिल्स

के राजा फ्रांसिस द्वितीय के विरुद्ध विद्रोह कर दिया था; 5 मई 1860 को गेरीबाल्डी अपने 'दस हज़ार' 'लाल कुर्तों वालों' ('REDSHIRTS') के साथ दो स्टीमरों में जिनोआ से चला; नेपिल्स की 24,000 फ़ौज सिसली में और एक लाख मुख्य भूमि पर थी; सिसली के विद्रोहियों ने गेरीबाल्डी की मदद की; कई बार मौत से टकरा कर अन्ततः उसने द्वीप पर कब्ज़ा कर लिया और 5 अगस्त 1860 को इमानुएल द्वितीय के नाम पर सिसली का शासक बना; 19 अगस्त को वह जलडमरूमध्य पार कर नेपिल्स की ओर बढ़ा; 6 सितम्बर को फ्रांसिस द्वितीय भाग निकला, जनता गेरीबाल्डी से जा मिली; वह रेल से नगर पहुँचा और घोड़े पर सड़कों पर आया; 5 माह से कम में उसने 1 करोड़ 10 लाख जनसंख्या वाले राज्य को जीत लिया जो इतिहास की अद्भुत घटना थी। अब उसने रोम पर चढ़ाई की सोची जहाँ फ्रेंच सेना का कब्ज़ा था; कावूर ने स्थिति की नज़ाकत को भांप कर बागडोर संभाली और इमानुएल द्वितीय से पोप के राज्यों पर चढ़ाई कर दी; नेपोलियन तृतीय ने उसे रोम को छोड़कर मार्श और अम्ब्रिया जैसे पोप के राज्यक्षेत्रों को कब्जाने की छूट दे दी। 1860 में इमानुएल ने पोप की फ़ौज को कास्तेलफ़िदारदो में हराकर नेपिल्स में प्रवेश किया; 7 नवम्बर को इमानुएल व गेरीबाल्डी की सवारी सड़क पर साथ निकली। गेरीबाल्डी ने कोई पुरस्कार न लिया, सिर्फ़ एक थैला सेम के बीज लेकर काप्रीरा में खेती को चला गया। मार्श, अम्ब्रिया और नेपिल्स की जनता ने इटली में शामिल होने को वोट किया।

<u>इटली का उदय</u>: 18 फ़रवरी 1861 को टूरिन में नयी संसद बनी जिसमें रोम और वेनीशिया के अलावा सारी इटली के प्रतिनिधि मौजूद थे, सार्डीनिया का नाम बदल कर इटली हो गया; 17 मार्च को यह घोषणा हुई; इमानुएल द्वितीय को 'ईश कृपा व राष्ट्र की इच्छा से इटली का राजा' बनाया गया। 18 महीने के अंदर दो करोड़ बीस लाख जनसंख्या वाले नये राज्य का उदय हुआ। कावूर को 'बिना रोम के' इटली अधूरी लगती थी, यूरोप के कैथलिकों से रोम को राजधानी मनवाने की अपार मेहनत में वह 'अनिद्रा' का रोगी हो गया, 6 जून 1861 को सुबह बुख़ार से 51 साल की भरी जवानी में चल बसा। लार्ड पामर्स्टन ने 'हॉउस ऑव कॉमन्स' में कहा कि 'कावूर ने एक ऐसा नाम छोड़ा है जो इतिहास की शोभा बढ़ाता है, उसकी कहानी विश्व इतिहास की असाधारण रोमांटिक कहानी है।' एक व्यक्तिगत पत्र में उसने लिखा था कि 'मैं स्वतंत्रता का पुत्र हूँ और जो कुछ भी हूँ उसी की कृपा से हूँ।'